जाको राखे शिव भगवान...

● ब्रह्माकुमार नरेन्द्र गोयल, वरिष्ठ अधिवक्ता, अजमेर

बात पाँच साल पुरानी है। अजमेर से 15 कि.मी. की दूरी पर आयातित सीयलो गाड़ी को चलाते हुए मैं अकेले जा रहा था। पीछे से आ रहा ट्रक इण्डिकेशन देने के बावजूद मेरी चालक सीट पर चढ़ गया। ड्राइवर शराब पीये हुए था। मेरी गाड़ी के पहिये मुड़ गये, चेसिस और गियर बॉक्स ध्वस्त हो गये। चाबी के टुकड़े-टुकड़े हो गये। देखते-ही-देखते पूरी गाड़ी कबाड़ हो गई जिसे 17 रुपये प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से बेचना पड़ा। शीशे टूट कर मेरे ऊपर आ गिरे थे परन्तु ऊपर वाले की छत्रछाया ऐसी थी कि मुझे खरोंच भी नहीं लगी। ऐसी भयावह स्थिति में मुझे अनुभव हो रहा था कि भगवान मुझे गोद में उठाये हुए हैं। भीषण त्रासदी में न घबराहट थी और न ही रिंचक मात्र भय। तुरंत पहुँचे थानेदार, शिवबाबा का बैज मेरे सीने पर देख कहने लगे, भगवान ने ही आपको बचाया है।

ड्राइवर को किया माफ

मात्र एक लाइन में मैंने एफ.आई.आर. दर्ज कराई कि मेरे साथ दुर्घटना घटी है परन्तु भगवान की कृपा से बाल-बाल बच गया। शराब की बदबू से भरे ड्राइवर को भी मैंने माफ कर दिया। वह तो मेरी गाड़ी को कुचल कर 70-80 मीटर तक उसे घसीटते हुए ले गया था जिससे वह पूरी तरह से चिर गई थी। कम्प्यूटराइज़्ड गाड़ी के चारों गेट दुर्घटना होते ही बन्द हो जाने चाहिएँ थे परन्तु दैवयोग से पीछे का एक गेट खुला रहा जिस कारण मैं मुसकराता हुआ बाहर निकल आया। गाड़ी को देखकर किसी को भी ख्याल भी नहीं हो सकता था कि चालक सीट पर बैठा व्यक्ति जीवित रह सकता है।

त्रासदी के बाद नया जन्म

सन् 1985 से मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूँ। तब से यह जीवन प्रभु की अमानत है। इस हादसे से पहले कभी भी मैंने अपना लौकिक या अलौकिक जन्मदिन नहीं मनाया था। सन् 1998 में ब्रह्माकुमारी बहन द्वारा पठित मुरली में सुना कि बच्चे, यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। तब मेरे मुख से अनायास ही निकला कि मेरा तो एक और भी जन्म होगा। इस त्रासदी से बचकर निकलते ही स्वत: अहसास हुआ कि यही तो एक और जन्म हुआ है। विगत पाँच सालों से इसी नए जन्म की यादगार को मैं अपना असली जन्मदिन मानकर सभी के साथ मनाता हूँ।

स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार

इस दुर्घटना के बाद से ही मैं

नियमित ईश्वरीय ज्ञान की क्लास करने लगा। रिश्ते-नातों में भी अलौकिकता के साथ हर प्रकार से सुधार आने लगा। तन-मन-धन से मैं बाबा और उनकी सेवा में व्यस्त हो गया। बाबा की याद में बैठते ही ईश्वरीय खुशबू मन में समा जाती है। अहंकार व क्रोध के समाप्त हो जाने से सारे संघर्ष जैसेकि जल गये। ऐसा लगता है कि सभी विकारों को बाबा ने ब्लाटिंग पेपर बन सोख लिया है। शरीर के दु:ख-दर्द ही समाप्त नहीं हुए बल्कि सामाजिक विरोध-अवरोध भी मिट गये। वकालत जैसे कार्य में व्यस्त रहते भी ऐसा लगता है कि मैं तो निमित्त मात्र हूँ। करनकरावनहार शिवबाबा ही सब कुछ करा रहे हैं। इस दुर्घटना के बाद से मेरे स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होने

लगा। बी.पी., डायबिटीज आदि सामान्य स्तर पर आ गए। सार यही है कि यह त्रासदी मुझे बाबा के अधिक करीब ले आई जिससे जीवन की सब नकारात्मकताएँ, सकारात्मक बन गईं।

उस समय मेरी गाड़ी एल.पी.जी. गैस से चल रही थी। ऐसी स्थिति में घटी दुर्घटना में तुरन्त आग लग जानी चाहिए थी परन्तु यह समाचार सुन सभी लोग दाँतों तले अँगुली दबाते हुए कह उठे, जाको राखे शिव भगवान...। अब तो हर पल लगता है कि बापदादा मेरे साथ-साथ चल रहे हैं। सच में ईश्वरीय सहारा पाकर जीवन धन्य-धन्य हो गया। ❖

सहना अर्थात् पूज्य बनना

● विमला गोठवाल, निम्बाहेड़ा (राज.)

एक चरवाहे की बकरियाँ जंगल में चर रही थीं। खाली बैठे-बैठे उसने पास पड़े पत्थर पर, दूसरे तीखे पत्थर से प्रहार करना शुरू किया पर दो-तीन प्रहार खाकर वह पत्थर टूट कर दूर जा गिरा। चरवाहे ने एक और नया पत्थर लेकर उस पर जब तीखे पत्थर से चोटें करनी शुरू की तो वह नया पत्थर चोटें सहता गया और शाम होने तक एक मूर्ति के आकार में ढल गया। उसे वहीं छोड़ चरवाहा बकरियाँ लेकर घर लौट गया।

न सहने का पश्चाताप

रास्ते से गुजरते खेतीहर मजदूरों ने उस मूर्ति को देखा तो उनको लगा, यह तो चमत्कार हो गया। सुबह तो मूर्ति यहाँ थी नहीं, भगवान ने हमारे लिए भेजी होगी, अवश्य हमें इसके लिए मन्दिर बना देना चाहिए। सभी के सहयोग से मन्दिर बन गया और वह मूर्ति स्थापित हो गई। उस पर चढ़ाने के लिए उसी पत्थर पर नारियल तोड़े जाने लगे जो दो-चार चोटें खाकर टूटकर दूर जा गिरा था और उसे मन्दिर के दरवाजे पर रख दिया गया ताकि रोज उस पर नारियल तोड़े जा सकें। पूजा करके सब लोग लौट गए। आधी रात को मूर्ति ने अचानक दरवाजे पर रखे पत्थर से पूछा, कहो दोस्त! क्या हालचाल है? पत्थर बोला, कुछ मत पूछो दोस्त, तुमने तो एक दिन की चोटों को सहन कर लिया जिससे आज तुम्हारी पूजा की जा रही है और उस दिन मैं एक-दो चोटों से ही घबरा कर भाग खड़ा हुआ। अब मेरे शरीर पर रोज़ चोटें की जायेंगी अर्थात् नारियल फोड़े जायेंगे, इसका पश्चाताप मुझे जिन्दगी भर रहेगा।

ज्ञान-योग का बल आड़े वक्त काम आता है

कई लोग कहते हैं, हम ज्ञान में तो चलें पर सुबह की मीठी नींद खराब करके उठना, मनमर्जी वाली, जिह्वा के स्वाद वाली चीजों का त्याग करके खान-पान के नियमों में बंधना, यह सब हमसे नहीं होगा। लेकिन मुसीबतों से भरी इस दुनिया में जब कोई शारीरिक-मानसिक मुसीबत आती है और मन उसे झेल नहीं पाता तब स्वत: मुख से निकलता है कि उस समय से हमने ज्ञान द्वारा मन को मजबूत बनाया होता और सात्विक तथा स्वास्थ्यप्रद खान-पान लिया होता तो आज हमारी यह मुसीबत हम पर हावी न हुई होती। हम इसे सहन करने और पार करने में सक्षम होते। अत: जैसे बहुत काल से एकत्रित किया गया धन, आर्थिक शक्ति बनकर हमें आपातकाल में मदद करता है इसी प्रकार बहुतकाल से एकत्रित किया गया ईश्वरीय ज्ञान-योग का बल भी आड़े वक्त काम आता है। वर्तमान संगमयुग (कलियुग के अंत और सतयुग के प्रारंभ के बीच का समय) में थोड़ा-सा नियम पालन हमें यम के भय से मुक्त कर 21 जन्मों का सुख प्रदान करता है। ❖